

श्री वर्तमान चौबीसी पूजन

(कविवर वृन्दावनदास कृत)

वृषभ अजित सम्भव अभिनन्दन, सुमति पदम सुपार्श्व जिनराय ।
चन्द पुहुप शीतल श्रेयांस जिन, वासुपूज्य पूजित सुरराय ॥
विमल अनन्त धर्म जस-उज्ज्वल, शांति कुंथु अर मल्लि मनाय ।
मुनिसुव्रत नमि नेमि पार्श्व प्रभु, वर्द्धमान पद पुष्प चढ़ाय ॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिमहावीरांतचतुर्विंशतिजिनसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिमहावीरांतचतुर्विंशतिजिनसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठःठः ।

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिमहावीरांतचतुर्विंशतिजिनसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

मुनि-मन-सम उज्ज्वल नीर, प्रासुक गन्ध भरा ।

भरि कनक-कटोरी धीर, दीनी धार धरा ॥

चौबीसों श्री जिनचन्द, आनन्द-कन्द सही ।

पद जजत हरत भव-फन्द, पावत मोक्ष-मही ॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिमहावीरान्तेभ्यो जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं नि. स्वाहा ।

गोशीर कपूर मिलाय, केशर-रंग भरी ।

जिन-चरनन देत चढ़ाय, भव-आताप हरी ॥चौबीसों. ॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यः संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।

तन्दुल सित सोम-समान सुन्दर अनियारे ।

मुक्ता फल की उनमान पुज्ज धरों प्यारे ॥चौबीसों. ॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिमहावीरान्तेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

वर-कंज कदम्ब कुरण्ड, सुमन सुगन्ध भरे ।

जिन-अग्र धरों गुन-मण्ड, काम-कलंक हरे ॥चौबीसों ॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिमहावीरान्तेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

मन-मोदन मोदक आदि, सुन्दर सद्य बने ।

रस-पूरित प्रासुक स्वाद, जजत क्षुधादि हने ॥चौबीसों. ॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिमहावीरान्तेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

तम-खण्डन दीप जगाय, धारों तुम आगै ।
 सब तिमिर मोहक्षय जाय, ज्ञान-कला जागै ॥
 चौबीसों श्री जिनचन्द, आनन्द-कन्द सही ।
 पद जजत हरत भव-फन्द, पावत मोक्ष-मही ॥
 ॐ ह्रीं श्री वृषभादिमहावीरान्तेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।
 दशगन्ध हुताशन माहिं, हे प्रभु! खेवत हों ।
 मिस-धूम करम जर जाहिं, तुम पद सेवत हों ॥चौबीसों॥
 ॐ ह्रीं श्री वृषभादिमहावीरान्तेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।
 शुचि पक्व सुरस फल सार, सब ऋतु के ल्यायो ।
 देखत दृग-मनको प्यार, पूजत सुख पायो ॥चौबीसों॥
 ॐ ह्रीं श्री वृषभादिमहावीरान्तेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।
 जल फल आठों शुचिसार, ताको अर्घ्य करें ।
 तुमको अरपों भवतार, भव तरि मोक्ष वरों ॥चौबीसों॥
 ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिमहावीरान्तेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जयमाला

(दोहा)

श्रीमत तीरथनाथ-पद, माथ नाथ हित हेत ।
 गाऊँ गुणमाला अबै, अजर अमर पद देत ॥

(त्रिभंगी)

जय भव-तम भंजन, जन-मन-कंजन, रंजन दिन-मनि, स्वच्छ करा ।
 शिव-मग-परकाशक, अरिगण-नाशक, चौबीसों जिनराज वरा ॥

(पद्धरि)

जय ऋषभदेव रिषि-गन नमन्त, जय अजित जीत वसु-अरि तुरन्त ।
 जय सम्भव भव-भय करत चूर, जय अभिनन्दन आनन्द-पूर ॥
 जय सुमति सुमति-दायक दयाल, जय पद्म पद्म द्युति तनरसाल ।
 जय जय सुपार्श्व भव-पास नाश, जय चन्द, चन्द-तनद्युति प्रकाश ॥
 जय पुष्पदन्त द्युति-दन्त-सेत, जय शीतल शीतल-गुननिकेत ।
 जय श्रेयनाथ नुत-सहसभुज्ज, जय वासव-पूजित वासुपुज्ज ॥

जय विमल विमल-पद देनहार, जय जय अनन्त गुण-गण अपार।
जय धर्म धर्म शिव-शर्म देत, जय शान्ति शान्ति पुष्टी करेत॥
जय कुन्थु कुन्थुवादिक रखेय, जय अरजिन वसु-अरि छय करेय।
जय मल्लि मल्ल हत मोह-मल्ल, जय मुनिसुव्रत व्रत-शल्ल-दल्ल॥
जय नमि नित वासव-नुत सपेम, जय नेमिनाथ वृष-चक्र नेम।
जय पारसनाथ अनाथ-नाथ, जय वर्द्धमान शिव-नगर साथ॥

(त्रिभंगी)

चौबीस जिनन्दा, आनन्द-कन्दा, पाप-निकन्दा, सुखकारी।
तिन पद-जुग-चन्दा, उदय अमन्दा, वासव-वन्दा, हितकारी॥
ॐ ह्रीं श्री वृषभादिमहावीरान्तचतुर्विंशतिजिनेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सोरठा)

भुक्ति-मुक्ति दातार, चौबीसों जिनराजवर।
तिन-पद मन-वच-धार, जो पूजै सो शिव लहै॥
(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

करलो जिनवर का गुणगान

करलो जिनवर का गुणगान, आई मंगल घड़ी।
आई मंगल घड़ी, देखो मंगल घड़ी॥करलो॥१॥
वीतराग का दर्शन पूजन भव-भव को सुखकारी।
जिन प्रतिमा की प्यारी छवि-लख मैं जाऊँ बलिहारी॥करलो॥२॥
तीर्थंकर सर्वज्ञ हितंकर महा मोक्ष के दाता।
जो भी शरण आपकी आता, तुम सम ही बन जाता॥करलो॥३॥
प्रभु दर्शन से आर्त रौद्र परिणाम नाश हो जाते।
धर्म ध्यान में मन लगता है, शुक्ल ध्यान भी पाते॥करलो॥४॥
सम्यक्दर्शन हो जाता है मिथ्यातम मिट जाता।
रत्नत्रय की दिव्य शक्ति से कर्म नाश हो जाता॥करलो॥५॥
निज स्वरूप का दर्शन होता, निज की महिमा आती।
निज स्वभाव साधन के द्वारा सिद्ध स्वगति मिल जाती॥करलो॥६॥